अव्यक्त इशारे
निर्मल और निर्मान बन विश्व नव-निर्माण करो

1) अपने स्वभाव को निर्मल (शीतल शुद्ध) बना दो तो हर कार्य में सफलता मिलती रहेगी। अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। 'निर्मल स्वभाव' अर्थात् बिल्कुल शीतल, शुद्ध। कोई भी बात जोश दिलाने वाली हो लेकिन आप निर्मल रहो। परिवर्तन शक्ति के आधार पर सेकण्ड में बिन्दी लगा दो, अन्दर हलचल न हो तब कहेंगे निर्मल और निर्मान।
2) जिन बच्चों का स्वभाव निर्मल हैं। वह विचार देने लेने में सहज होंगे, किसी भी सेवा में विघ्न रूप नहीं बनेंगे। उन्हें यह संकल्प भी नहीं आयेगा कि मेरा विचार, मेरा प्लैन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया ... यह मेरापन आना भी अलाय मिक्स होना है।
3) जो बच्चे सदा निर्मल और निर्मान स्वभाव वाले हैं उनके मन-बुद्धि में व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। वे निर्मल और निर्मान होने के कारण सभी को प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जलता हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया उसे शीतल बना देगी।
4) आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं के यादगार में भी नयन सदा निर्मल दिखाते हैं। कभी भी अभिमान या अपमान के नयन नहीं दिखाते। कोई भी देवी वा देवता के नयन निर्मल वा रुहानी होंगे। तो जब कभी किसी के प्रति कोई ऐसा निगेटिव संकल्प आये तो याद रखो कि मैं कौन हूँ! मेरे जड़ - चित्र भी रुहानी नैनधारी हैं तो मैं तो चैतन्य हूँ?
5) जो नम्रचित, निर्मल स्वभाव वाले हैं, उन्हें कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा। वर्णन नहीं करेंगे, अपने गीत नहीं गायेंगे। दूसरे उनके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेंगे इसलिए कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो।
6) निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। उनके चेहरे पर कभी कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह नहीं होगा इसलिए निर्मान बनो, कोमल नहीं। कोमल उसे कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे नहीं पानी डालो और बह जाये वा मुरझा जाए।
7) निर्मान बनना ही स्वमान है और यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्मान बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है। जितना निर्मान उतना सबके दिल में महान् स्वतः ही बनेंगे। बिना निर्मानता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्मानता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्मानता का बीज महानता का फल स्वतः प्राप्त कराता है।
8) बापदादा सभी बच्चों को विशेष श्रीमत दे रहे हैं - बच्चे बोल में निर्मान बनो। निर्मानता ही महानता है। यह झुकना नहीं है लेकिन सबको अपने ऊपर झुकाना है। यही दुआयें प्राप्त

करने का साधन है। सच्चे सेवाधारी को कभी सेवा की सफलता का अभिमान नहीं रहता। जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्मान, निर्मल स्वभाव रहता है।

9) कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

10) अपने श्रेष्ठ स्वमान का बुद्धि में जितना नशा रहे उतना कर्म में सदैव नम्रता रहे। जैसे ऊंच ते ऊंच बाप भी बच्चों के आगे गुलाम बनकर आते हैं तो नम्रता हुई ना ! जितना ऊंच उतना ही नम्र– - ऐसा बैलेन्स रहे क्योंकि विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों का सेवाधारी बना। ऐसे ही फॉलो फादर।

11) तकदीरवान बच्चे हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करते हैं। उनके हर बोल में नम्रता, निर्माणता और महानता होगी। जो अपने को निमित्त समझते हैं उन्हों में महानता के साथ नम्रता अवश्य होगी। अगर नम्रता के बजाय महानता या महानता के बजाय नम्रता ज्यादा है तो भी सफलतामूर्त नहीं बनेंगे।

12) कोई भी कर्म करते करावनहार बाप की स्मृति रहे तो हर कर्म में न्यारेपन, निरहंकारीपन और नम्रतापन के नव-निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई होगी। हर सेकेण्ड, हर संकल्प सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् स्वच्छ होगा, जिसको सच्चाई और सफाई कहते हैं।

13) नमना अर्थात् झुकना - तो जब नमेंगे तब ही सब नमन करेंगे। ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं, जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है-नहीं। यह अल्पकाल का है, लेकिन आप दूरादेश बुद्धि रखो यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें आपके आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से मन से झुकेंगे और द्वापर, कलियुग में काँध झुकायेंगे।

14) जैसे वृक्ष के लिये कहते हैं जितना भरपूर होगा उतना झुका हुआ होगा तो जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है। ऐसे ही निर्मान आत्मायें सबको सुख देने की सेवा करेंगी। जहाँ भी जायेंगी, जो भी करेंगी वह सुखदायी होगा। जितना स्वमान उतना निर्मान। ऐसे नहीं – हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए।

15) शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है - निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। कभी भी सभ्यता को छोड़ करके सत्यता को सिद्ध नहीं करना। सभ्यता की निशानी है निर्मानता। यह निर्मानता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

16) हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का स्वभाव, हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव धारण करो। यह स्वभाव आपको सदा हल्का रखेगा। कोई भी बोझ अनुभव नहीं होगा।

17) जो निर्मान होते हैं उनमें रोब नहीं होता है, रूहानियत की झलक होती है। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट कहकर बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं, ऐसे फालो फादर। अगर जरा भी सेवा में रोब आता है तो वह सेवा समाप्त हो जाती है।

18) निरहंकारी बनने की विशेष निशानी है - निर्माणता। वृत्ति, दृष्टि, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें निर्माणता का गुण धारण करो तो महान बन जायेंगे, जो निर्मान रहता है वह सर्व द्वारा मान पाता है। स्वयं निर्माण बनेंगे तो दूसरे मान देंगे, जो अभिमान में रहता है उसको कोई मान नहीं देते, उससे दूर भागेंगे।

19) सेवाधारी की विशेषता है - एक तरफ अति निर्मान, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जितना ही निर्मान उतना ही बेपरवाह बादशाह। निर्मान और अथॉरिटी दोनों का बैलेंस। निर्माण-भाव, निमित्त भाव, बेहद का भाव - यही सेवा की सफलता का विशेष आधार है।

20) जितना ही स्वमान उतना ही फिर निर्मान। स्वमान का अभिमान नहीं। ऐसे नहीं – हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए। कैसी भी आत्मायें हों लेकिन रहम की दृष्टि से देखें, अभिमान की दृष्टि से नहीं। न अभिमान, न अपमान। यदि अभिमान नहीं होगा तो अपमान, अपमान नहीं लगेगा। वह सदा निर्मान और निर्माण के कार्य में बिज़ी रहेगा।

21) जो निर्मान होता है वही नव-निर्माण कर सकता है। शुभ- भावना वा शुभ-कामना का बीज ही है निमित्त-भाव और निर्मान- भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्मान। निर्मान होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करना ही सभ्यता वा सत्यता है।

22) नम्रचित, निर्मान वा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली आत्मा के प्रति कभी मिसअन्डरस्टैन्डिंग से दूसरों को हार का रूप दिखाई देता है लेकिन वास्तविक उसकी विजय है। सिर्फ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल शक्य का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह शक्य न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल वाह-वाह के पुष्प चढ़ायेंगे।

23) संस्कारों में निर्मान और निर्माण दोनों विशेषतायें मालिक- पन की निशानी हैं। साथ-साथ सर्व आत्माओं के सम्पर्क में आना, स्नेही बनना, सर्व के दिलों के स्नेह की आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावना सबके अन्दर से उस आत्मा के प्रति निकले। चाहे जाने, चाहे न जाने दूर का सम्बन्ध वा सम्पर्क हो लेकिन जो भी देखे वह स्नेह के कारण ऐसे ही अनुभव करे कि यह हमारा है।

24) सेवाधारी अर्थात् निर्माण करने वाले और निर्मान रहने वाले। निर्माणता ही सेवा की सफलता का साधन है। निर्मान बनने से सदा सेवा में हल्के रहेंगे। निर्मान नहीं, मान की इच्छा है। तो बोझ हो जायेगा। बोझ वाला सदा रूकेगा। तीव्र नहीं जा सकता, इसलिए अगर कोई भी बोझ अनुभव होता है तो समझो निर्मान नहीं हैं।

25) ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया - इतना निर्मान होकर सेवाधारी बनें जो बच्चों के पांव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते हैं। 'पहले मैं' कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे - कहा तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊंचा जाना है। दूसरों को मान देकरके स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

26) अल्पकाल के विनाशी मान का त्याग कर स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सम्मान देते चलो। यह देना ही लेना बन जाता है। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्लास में लाकर आगे करना है। यह सदाकाल का उमंग-उत्साह अर्थात् खुशी का वा स्वयं के सहयोग का खजाना, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है।

27) हर समय नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता है कवच। यही सेफ्टी का साधन है। जहाँ नम्रता होगी वहाँ स्नेह और सहयोग अवश्य होगा। सच्चे नशे में रहने वाले सदा नम्रचित होंगे। नम्रता से ही सबको अपने आगे झुकायेंगे। नम्रचित आत्मा सुखदाता बन सकती है।

28) सदा रुहानियत में रहकर सेवा करो तो चेहरे पर रूहाब दिखाई देगा। रूहाब में रहने वाले नम्रचित होंगे और निर्माण का कार्य करेंगे। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर। सेवा में आगे बढ़ते वृत्ति, दृष्टि, बोल और चाल में निर्मानता दिखाई दे, इससे ही बापदादा की व छोटे-बड़ों की दुआयें मिलेंगी जो सफलता दिलायेंगी।

29) निमित्त आत्मा समझने से दो विशेषतायें साकार रूप में दिखाई देंगी - 1. सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे। 2. सदा सन्तुष्टता का फल खाते और खिलाते रहेंगे। मैं निमित्त हूँ - इससे न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करेंगे। मैं शब्द समाप्त हो जायेगा। ''मैं'' के बजाए बाबा-बाबा कहने से सबकी बुद्धि बाप की तरफ जायेगी और विशेष शक्ति का अनुभव करेंगे।

30) नम्रता और रहम की भावना अभिमान की महसूसता नहीं कराती। जैसे मुरलियों को सुनते हो तो उसमें अथॉरिटी के बोल हैं लेकिन उससे कोई अभिमान नहीं लगता। तो भल शब्द कितने भी सख्त हों लेकिन अभिमान न लगे, जितनी अथॉरिटी उतना ही नम्रता और रहम भाव हो।

31) कई बच्चे बॉडी कान्सेस के कारण बार-बार कहेंगे 'मैं' यह समझता हूँ, 'मैंने' जो कहा वही ठीक है, 'मैंने' जो सोचा वही ठीक है - यह रॉयल रूप का मैं-पन नम्रचित बनने नहीं देता। यही ''मैं-पन'' कमजोर बना देता है, कमजोर आत्मा कहेगी मैं तो इतना सहन नहीं कर सकती, इतना निर्मान तो नहीं बन सकती, इतनी समस्यायें पार नहीं कर सकती इसलिए पहले "मैं" "मैं" की बलि चढ़ाओ तब विश्व नव निर्माण का कार्य सम्पन्न कर सकेंगे।